भगत नामदेव - सबद १

देवा पाहन तारीअले ॥

रागु गउड़ी चेती, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ३४५

देवा पाहन तारीअले ॥
राम कहत जन कस न तरे ॥१॥ रहाउ ॥
तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥
चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥
हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥१॥
दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥
जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥२॥१॥

सार: पौराणिक रूपक मुश्किल विचारों को सरल और प्रभावशाली ढंग से समझाने के प्रभावी साधन होते हैं। परिचित प्रतीकों और कहानियों के माध्यम से वह अमूर्त अवधारणाओं को सहज और संबंध योग्य बना देते हैं। यह प्रतीक अक्सर सार्वभौमिक सिद्धांतों को व्यक्त करते हैं जो व्यक्तिगत भिन्नताओं से परे जाकर विभिन्न संस्कृतियों और कालखंडों में साँझा मूल्यों और सत्यों को उजागर करते हैं। यह उन समान मूल्यों और सच को रेखांकित करता है जो हम सभी को एक सूत्र में बाँधते हैं। इसके अलावा, जब पौराणिक प्रतीकों की आलोचनात्मक दृष्टि से व्याख्या की जाती है तब वह आध्यात्मिक ज्ञान को प्रोत्साहित करते हैं और आत्म-परिवर्तन की शक्ति प्रदान करते हैं। इस तरह, मिथक केवल कथाएँ नहीं, सार्थक मार्गदर्शक बन जाते हैं जो हमें अधिक न्यायपूर्ण और दयालु समाज बनाने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करते हैं।

देवा पाहन तारीअले ॥
ज्ञान का दाता, पत्थर की तरह सख़्त लोगों को भी आध्यात्मिक ज्ञान दे सकता है। यह दर्शाता है कि आत्म-चिंतन सबसे प्रतिरोधी मानसिकता में भी आध्यात्मिक विकास का द्वार खोल सकता है।

राम कहत जन कस न तरे ॥१॥ रहाउ ॥
वह विनम्र लोग जो सर्वव्यापक चेतना के प्रति सजग हैं, उनको ज्ञान का प्रकाश क्यों न मिले। (१)(विराम)

तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥
गणिका (वेश्या) गलत काम के लालची आकर्षण, कुबिजा (कुबड़ी,दिव्यांग) असुरक्षा की चुनौती और अजामल (धोखेबाज़) अशुद्ध इरादों की नियत के प्रतीक हैं। फिर भी, आध्यात्मिक ज्ञान से प्राप्त जागरूकता द्वारा इनको पार किया जा सकता है।

चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥
सर्वव्यापक चेतना के समक्ष विनम्र समर्पण ही मुक्ति का मार्ग है।

हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥१॥
मैं उन लोगों पर क़ुर्बान हो जाऊं जो सर्वव्यापक चेतना से जुड़ते हैं। (१)

दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥
दासी के बेटे बिदुर, भगवान कृष्ण के विनम्र दोस्त सुदामा और अत्याचारी राजा कंस के पिता उग्रसैन, इन सभी के अधिकारों को स्वीकार किया गया था। यह पौराणिक संदर्भ बताते हैं कि न्याय और समानता सार्वभौमिक क़ानून के मूल सिद्धांत हैं।

जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥२॥१॥
बिना किसी पूजा-पाठ, तपस्या, किसी विशेष वंश, कुल या कर्मकांड के, नाम देव के प्रिय, सर्वव्यापी चेतना ने बेकार को भी लायक़ बना दिया है। यह हर व्यक्ति में अंतर्निहित मूल्य को दर्शाता है, चाहे उसका सामाजिक, धार्मिक या सांस्कृतिक आधार कुछ भी हों। (२)(१)

तत्त्व: भक्त नामदेव ने स्पष्ट रूप से बताया है कि बाहरी आडंबर के प्रभाव, जैसे रीति-रिवाज या कुल-वंश, किसी व्यक्ति के वास्तविक मूल्य को निर्धारित नहीं करते। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि जागरूकता उन लोगों को भी ऊपर उठा सकती है जो स्वयं को तुच्छ समझते हैं या जिन्हें दूसरे लोग ज़रूरी नहीं समझते। सार्वभौमिक चेतना से सार्थक संबंध स्थापित करने का आह्वान करते हुए वह बाहरी भक्ति से अधिक आंतरिक अनुभूति पर बल देते हैं। यह दृष्टिकोण पारंपरिक सीमाओं और पूर्वाग्रहों से परे जाकर समावेशिता को अपनाता है और दिव्यता के साथ एक सच्चा संबंध स्थापित करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com